दान्को का जलता हुआ हृदय

मक्सिम गोर्की

(इस अंक में हम पाठक साथियों के लिए गोर्की की विश्वप्रसिद्ध कहानी बुढ़िया इज़रगिल का एक अंश दे रहे हैं। यह कहानी लोककथाओं के एक नायक दान्को के बारे में है जिसकी कहानी बुढ़िया इज़रगिल ने गोर्की को सुनायी थी।

जब कौमें अन्धेरे में खो जाती है, राष्ट्र गुलामी के रसातल में डूब जात हैं तो ऐसे समय में मेहनतकश जनता के बहादुर सपूत आगे आते हैं और अपना दिल चीरकर उसकी रोशनी से राहें रोशन करते हैं। दान्को उन पराक्रमी युवाओं का प्रतीक है जो न केवल राहों को खोजते हैं बल्कि राहें बनाते हैं और इतिहास के सर्पिल संघर्ष-पथ से जनता के आगे बढ़ने में हरावल की भूमिका निभाते हैं।

पिछली सदी का अवसान हार और गतिरोध में हुआ। लेकिन पिछली सदी में सिर्फ हारें ही नहीं मिली हैं संघर्षों के अनुभव भी मिले हैं। ये बहुमूल्य अनुभव नयी सदी में हमारे संघर्षों के साथ रहेंगे ही। लेकिन नयी सदी में मुक्ति की राह निकाली जा सके, इसक लिए जरूरत है कुछ दान्को की। जरूरत है ऐसे युवाओं की जो अपना दिल चीरकर राहें रोशन कर सकें।

दान्को की यह कहानी हमारे युवा साथी सुकून से नहीं पढ़ सकेंगे, वे बेचैन हो उठेंगे और यह बेचैनी निश्चय ही उन्हें दान्को क रास्ते पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगी। – सम्पादक)

समुद्र की ओर से एक बादल उठा – खूब घना और काला, पर्वत-श्रृंखला की भाँति कटावदार। यह श्रृंखला स्तेपी की ओर बढ़ रही थी। उसके छोर से बादलों के गोले टूटकर अलग हो जाते, तेजी से उससे आगे बढ़ते और एक के बाद एक सितारे की रोशनी छीनते जाते। समुद्र फिर से गरजने लगा था। हमसे कुछ ही दूर अंगूरों के बगीचे से चुम्बन, फुसफुसाहट और गहरी सांसें सुनाई दे रही थीं। स्तेपी में कोई कुत्ता रो रहा था...हवा में एक अजीब गंध भरी थी, जो नथुनों और रगों में एक गुदगुदी-सी पैदा करती थी। बादलों की ढेरों, घनी परछाइयां धरती पर रेंग रही थी... कभी वे धुंधली पड़ जातीं और कभी खूब साफ दिखाई देने लगतीं..चांद अब धुंधली दूधिया आभा का एक गोल धब्बा मात्र रह गया था, जिसे बादल का एक छोटा-सा भूरा टुकड़ा कभी-कभी पूर्णतया ओझल कर देता था। स्तेपी-विस्तार में, जो मानो अपने आंचल में कुछ छिपाकर अब काली और भयानक हो उठा था, खूब दूर छोटी-छोटी, नीली लपटें थरथरा रही थीं। वे इस तरह चमक उठतीं जैसे लोग किसी चीज की खोज में स्तेपी में घूमते हुए दियासलाइयां जलाते हों, जिन्हें हवा तुरंत बुझा देती हो। बहुत ही अजीब थी ये नीली रोशनियां, परी-कथा सी झलक दिखाती-सी।

"तुम ये चिंगारियां देख रहे हो न ?" इजरगिल ने पूछा।

"वे छोटी-छोटी नीली रोशनियां ?" स्तेपी की ओर इशारा करते हुए मैंने जानना चाहा।

"नीली ? हां, ये वही हैं.., सो वे अब भी उड़ती रहती हैं ! ठीक...मैं तो अब उन्हें देख नहीं पाती। बहुत कुछ नहीं दिखाई देता अब मुझे।"

"कहां से निकल रही हैं ये ?" मैंने बुढ़िया से पूछा।

उनके बारे में पहले भी मैं कुछ सुन चुका था, लेकिन बुढ़िया इजरगिल क्या कहेगी, मैं यह सुनना चाहता था।

"ये दान्को के जलते दिल से निकल रही हैं। बहुत दिन पहले एक हृदय मशाल की भाँति जल उठा था...उसी से अब ये चिंगारियां निकलती हैं। मैं तुम्हें उसकी कहानी सुनाऊंगी. ..यह भी बहुत पुरानी कथा है...पुराना, सब कुछ पुराना है ! देख रहे हो न, कितना कुछ था पुराने दिनों में ?...आजकल तो कुछ भी नहीं है – न वे आदमी हैं, न वे कारनामे हैं, न वे किस्से हैं – कुछ भी तो ऐसा नहीं है जिसकी उन पुराने दिनों से तुलना की जा सके. ..ऐसा क्यों है ?...बताओ तो ! नहीं बता सकते...क्या जानते हो तुम ? नयी पीढ़ी के तुम सभी लोग क्या जानते हो ? ओह-हो !. ..अगर तुम अतीत की खोजबीन करो, तो जीवन की सभी पहेलियों का जवाब मिल जाये...लेकिन तुम लोग ऐसा नहीं करते और इसीलिए जीने का ढंग नहीं जानते...क्या मैं जीवन का रंग-ढंग नहीं देखती हूं! बेशक मेरी आंखें कमजोर हो गई हैं, फिर भी सब कुछ देखती हूं! और मैं देखती हूं कि जीने के बजाय लोग अपना समूचा जीवन जीने की तैयारी करने में गंवा देते हैं। और जब इतना सारा समय हाथ से निकल जाने के बाद वे अपने को लुटा हुआ देखते हैं, तो भाग्य को कोसने लगते हैं। भाग्य भला इसमें क्या कर सकता है ? हर आदमी खुद ही अपना भाग्य है! आज दुनिया में हर तरह के लोग हैं, लेकिन मुझे उनमें शक्तिशाली नजर नहीं आते ! वे कहां गये ?...और सुन्दर लोग भी दिन-दिन कम होते जा रहे हैं।"

बुढ़िया रुककर इस चिंता में डूब गयी कि शक्तिशाली और सुन्दर लोग कहां गये। वह यह सोच रही थी और उसकी आंखें स्तेपी के अंधकार में एकटक जमी थीं, मानो वे वहां इस प्रश्न के उत्तर की खोज कर रही हो।

उसके कहानी शुरू करने तक मैं चुपचाप प्रतीक्षा करता रहा। मुझे डर था कि मेरे कुछ कहने से कहीं उसका धयान न भटक जाये।

और उसने कहानी सुनानी शुरू कर दी।

3

"बहुत, बहुत पहले एक जाति थी। वह जिस जगह रहती थी उसके तीन ओर अगम्य जंगल छाये थे और चौथी ओर घास के मैदान फैले थे। इस जाति के लोग तगड़े, बहादुर और खुशमिजाज थे। लेकिन बुरे दिनों ने उन्हें आ घेरा। अन्य जातियों का वहां धावा हुआ और उन्होंने उनको जंगल की गहराइयों में खदेड़ दिया। जंगल अंधकार में डूबा हुआ और दलदली था। कारण कि वह बहुत पुराना था और पेड़ों की शाखाएं ऐसे कसकर एक दूसरी के साथ गुंथी थी कि आकाश की शक्ल तक नजर नहीं आती थी और घनी हरियाली को चीरकर दलदलतक पहुंचने में सूरज की किरणों की सारी शक्ति चुक जाती थी। लेकिन जब वे उस पानी तक पहुंचती थी, तो विषैली गंध उठने लगती थी, जिससे लोग मरने लगते थे।

"तब उस जाति की स्त्रियां और बच्चे रोने-पीटने लगे और पुरुष चिंता में घुलने लगे। जंगल से निकल जाने के सिवा कोई चारा न रहा, लेकिन बाहर निकलने के दो ही रास्ते थे – एक पीछे की ओर, जहां सशक्त और जानी दुश्मन थे, दूसरा आगे की ओर, जहां दैत्याकार पेड़ उनका रास्ता रोके खड़े थे, जिनकी मजबूत शाखाएं एक-दूसरी के साथ मजबूती से गुंथी थीं और जिनकी टेढ़ी-मेढ़ी तथा गांठ-गठीली जड़ें दलदली कीचड़ में बहुत गहरी चली गयी थीं। ये पत्थरनुमा पेड़ दिन के धूसर अंधेरे में निर्वाक और निश्चल खड़े रहते और रात को जब अलाव जलते, तो लोगों के गिर्द अपना घेर और भी कस लेते तथा स्तेपी की उन्मुक्त गोद के अभ्यस्त लोग दिन-रात अंधेरे की दीवारों में बंद रहते जो मानो उन्हें कुचलने की कसम खाये बैठी थीं। इस सबसे भी भयानक थी हवा, जो पेड़ों की चोटियों पर से सनसनाती और फुफकारती हुई गुजरती और ऐसा मालूम होता मानो समूचा जंगल उन लोगों के लिए किसी भयंकर शोक-गीत से गूंज उठा हो। वे एक बहादुर जाति के लोग थे और मृत्यु पर्यन्त उन लोगों से लड़ते, जिन्होंने उन्हें एक बार हरा दिया था। लेकिन वे लड़ाइयों में अपने को मरने नहीं दे सकते थे, क्योंकि उनके अपने जीवन-आदर्श थे और अगर वे मर जाते तो उनके जीवन-आदर्श भी उनके साथ ही नष्ट हो जाते। इसीलिए वे दलदल की जहरीली गंध और जंगल के घुटे-घुटे शोर वाली लम्बी रातों में बैठे हुए अपने भाग्य के बारे में सोचते रहते थे। वे सोच में डूबे बैठे होते, आग की लपटों की परछाइयां उनके इर्द-गिर्द मूक नृत्य में उछलती-कूदती और उन सबको ऐसा लगता कि ये निरी परछाइयां ही नृत्य नहीं कर रही हैं, बल्कि जंगल और दलदल की प्रेतात्माएं अपनी विजय का उत्सव मना रही हैं...लोग ऐसे बैठे-बैठे सोचते रहते। मगर परेशान करने वाले विचार आदमी को जितना निचोड़ते हैं, उतना और कोई चीज नहीं, न श्रम, न स्त्रियां। लोग चिंता से दुबलाने लगे...उनके हृदयों में भय उत्पन्न हुआ और उसने उनकी मजबूत बाहों को जकड़ लिया। विषैली गंध के कारण मरे लोगों के शवों पर स्त्रियों का विलाप और भय से निःशक्त हुए जीवितों पर उनका रोना-कलपना आतंक पैदा करता। और इस तरह जंगल में कायरतापूर्ण शब्द भनभनाने लगे – पहले धीमे और दबे-दबे और फिर निरंतर अधिक खुलकर...अंत में वे दुश्मन के पास जाकर उसे अपनी आजादी भेंट करने की सोचने लगे। मृत्यु के भय ने उन्हें इतना डरा दिया था कि हर कोई गुलाम की भांति जीवन बिताने को तैयार हो गया था...लेकिन तभी दान्को आया और उसने उन सबकी रक्षा की।

"दान्को उन्हीं में से एक सुन्दर जवान था। सुन्दर लोग हमेशा साहसी होते हैं। और उसने अपने साथियों से कहा –

"केवल सोचने से राह की चट्टानें नहीं हट जातीं। जो कुछ करते नहीं, वे कुछ पाते नहीं। सोच और परेशानी में हम अपनी शक्तियां क्यों बरबाद कर रहे हैं ? उठो, जंगल को चीरते हुए हम आगे बढ़ चलें – कहीं न कहीं तो इसका अंत होगा ही – हर चीज का अंत होता है! चलो, आगे बढ़ें!"

"लोगों की आंखें उसकी ओर उठीं और उन्होंने देखा कि वह उनमें सबसे श्रेष्ठ है, क्योंकि उसकी आंखें शक्ति और जीवन से दमक रही थीं।"

"हमारी अगुवाई करो!" उन्होंने कहा।

"और उसने उनकी अगुवाई की..."

"सो दान्को उन्हें ले चला। वे उत्साह से उसके साथ चले, क्योंकि उसमें उनका विश्वास था। रास्ता बड़ा विकट था! अंधेरा था, कदम-कदम पर दलदल अपना सड़ा हुआ लालची मुंह बाए थी। वह लोगों को निगल जाती थी और पेड़ मजबूत दीवारों की भांति राह रोक लेते थे। उनकी शाखाएं कसकर एक-दूसरी के साथ गुंथी थीं और सांपों की भांति हर तरफ फैली हुई थी उनकी जड़ें। हर कदम आगे बढ़ने के लिए उन्हें अपने रक्त और पसीने से कीमत चुकानी पड़ती। देर तक वे चलते रहे...जंगल अधिक घना होता गया और लोगों की शक्ति क्षीण पड़ती गयी! और तब वे दान्को के खिलाफ भुनभुनाने लगे। कहने लगे कि वह निरा लड़का और अनुभवहीन है और जाने हमें कहां ले आया है। लेकिन वह उनके आगे-आगे चलता रहा। उसके मन में किसी तरह की शंका और चेहरे पर कोई शिकन नहीं थी।

"लेकिन एक दिन तूफान ने जंगल को घेर लिया और पेड़ों में आतंकपूर्ण सनसनाहट दौड़ गयी। और तब इतना घना अंधेरा छा गया कि लगता था जैसे वे तमाम रातें एक साथ वहां जमा हो गयी हों जो जंगल के जन्म से लेकर अब तक बीती थीं। और वे छोटे-छोटे लोग भीमाकार पेड़ों तथा तूफानी गरज के बीच चलते रहे। वे चलते जाते, भीमाकार पेड़ चरचराते, भयंकर गीत-से गाते और पेड़ों की फुनगियों के ऊपर बिजली चमकती, क्षण भर के लिए एक ठंडी नीली रोशनी जंगल को जगमगा देती और फिर उतनी ही तेजी से गायब हो जाती। लोगों के हृदय भय से कांप उठते। बिजली की ठंडी रोशनी में पेड़ जीते-जागते मालूम होते – अपनी गठीली लम्बी बाहों को फैलाते और उन्हें गूंथकर घना जाल बिछाते – से, ताकि ये लोग, जो अंधकार की कैद से छूटने की कोशिश कर रहे थे, उसमें फंसकर रह जायें। शाखाओं के घटाटोप में से भी कोई ठंडी, काली और भयानक चीज उनकी ओर घूर रही थी। बड़ा ही चौड़ा मार्ग था वह। और लोग, जो थककर चूर-चूर हो गये थे, हिम्मत हार बैठे। लेकिन शर्म के मारे वे अपनी कमजोरी स्वीकार न करते और अपना गुस्सा तथा खीझ दान्को पर उतारते जो उनके आगे-आगे चल रहा था। वे उस पर आरोप लगाते कि वह उनकी अगुवाई करने की योग्यता नहीं रखता तो ऐसी हालत थी!

"वे रुक गये और उस कांपते हुए अंधेरे और जंगल की विजयोन्मत्त गरज के बीच थकान तथा गुस्से से बेहाल उन लोगों ने दान्को को भला-बुरा कहना शुरू किया।

"तुम कमीने और दुष्ट हो! तुम्हीं ने हमें इस मुसीबत में फंसाया है,' वे कह उठे, 'इसके लिए तुम्हें अब अपनी जान से हाथ धोने पड़ेंगे।'

"दान्को उनके सामने छाती तानकर खड़ा हो गया और चिल्लाकर बोला–

'''तुमने कहा – ''हमारी अगुवाई करो।'' और मैंने तुम्हारी अगुवाई की। मुझमें तुम्हारी अगुवाई करने की हिम्मत है और इसीलिए मैंने इसका बीड़ा उठाया। लेकिन तुम ? तुमने अपनी मदद के लिए क्या किया ? चलते ही रहे और अधिक लम्बे रास्ते के लिए अपनी शक्ति सुरक्षित नहीं रख पाये। भेड़ों के रेवड़ की भांति तुम केवल चलते ही रहे।'

उसके इन शब्दों ने उन्हें और भी ज्यादा भड़का दिया।

''हम तुम्हारी जान ले लेंगें ! तुम्हारी जान ले लेंगे।'' वे चीख उठे।

''जंगल गूंज रहा था, गूंज रहा था, उनकी चीखों को प्रतिध्वनित कर रहा था। बिजली अंधेरे की चिंदियां बिखेर रही थी। दान्को की नजर उन पर टिकी थी, जिनके लिए उसने इतना कष्ट उठाया था और उसने देखा कि वे दरिन्दे बने हुए हैं। एक अच्छी-खासी भीड़ उसे घेरे थी, लेकिन उनके चेहरों पर सद्भावना का कोई चिन्ह नजर नहीं आ रहा था और उनसे किसी तरह की दया की उम्मीद नहीं की जा सकती थी। तब उसके हृदय में गुस्से की एक आग-सी धधकी, लेकिन लोगों के प्रति दयाभाव ने उसे शान्त कर दिया। वह लोगों को चाहता था और उसे डर था कि उसके बिना वे नष्ट हो जायेंगे। उन्हें बचाने और सुगम पथ पर ले जाने की एक महती आकांक्षा की ज्योति उसके हृदय में जल उठी और इस महान ज्योति की तेज लपटें उसकी आंखों में नाचने लगीं...और यह देखकर लोगों ने सोचा कि वह आपे से बाहर हो गया है और इसी कारण उसकी आंखों में आग की प्रखर लौ थिरक रही है। वे भेड़ियों की भांति चौकस हो गये – इस आशंका से कि वह अब उन पर टूट पड़ेगा और उसके इर्द-गिर्द और भी निकट आ गये ताकि उसको दबोच लें और मार डालें। उसने उनके इस इरादे को भांप लिया, जिससे उसके हृदय की ज्योति और भी प्रखर हो उठी, क्योंकि उनके इस विचार से उसका दिल तड़प उठा था।

''और जंगल अपना शोकपूर्ण गीत गाता जा रहा था, बादल गरजते जा रहे थे और पानी जोर से बरसता जा रहा था...

''लोगों के लिए मैं क्या करूं ?'' दान्को की आवाज बादलों की गरज को बेधती हुई गूंज उठी।

''और सहसा उसने अपना वक्ष चीर डाला, अपने हृदय को नोचकर बाहर निकाला और उसे अपने सिर से ऊंचा उठा दिया।

''वह सूरज की भांति दमक रहा था, उसका प्रकाश सूरज से भी ज्यादा तेज था। जंगल की गरज शांत हो गयी और इस मशाल का – मानव जाति के प्रति महान प्रेम की इस मशाल का-आलोक फैल चला। प्रकाश से अंधकार के पांव उखड़ गये और वह कांपता-थरथराता हुआ दलदल के सड़े-गले गर्त में कूदकर जंगल की अतल गहराइयों में समा गया। और लोग आश्चर्य के मारे बुत बने वहीं खड़े रह गये।

'''बढ़ चलो!' दान्को ने चिल्लाकर कहा और अपने जलते हुए हृदय को खूब ऊंचा उठाकर लोगों का पथ जगमगाता हुआ तेजी से आगे बढ़ चला।

''मंत्रमुग्ध से लोग उसके पीछे हो लिये। तब जंगल एक बार फिर भुनभुनाने और अपनी फुनगियों को अचरज से हिलाने लगा। लेकिन उसकी यह भुनभुनाहट दौड़ते हुए लोगों के पांवों की आवाज में खो गयी। लोग अब साहस और तेजी के साथ भागते हुए आगे बढ़ रहे थे – जलते हुए हृदय का अद्भुत आलोक उन्हें अनुप्राणित कर रहा था। लोग मरते तो अब भी थे, लेकिन आंसुओं और शिकवे-शिकायत के बिना। दान्को सबसे आगे बढ़ा जा रहा था और उसका हृदय दहकता ही जा रहा था,दहकता ही जा रहा था!

''सहसा जंगल ने उनके लिए रास्ता बना दिया, रास्ता बना दिया और खुद पीछे रह गया – मूक और घना। और दान्को तथा वे सभी लोग सूरज की धूप और बारिश से धुली हवा के सागर मे हिलोरें लेने लगे। तूफान अब उनके पीछे, जंगल के ऊपर था, जबकि यहां सूरज सोना बिखेर रहा था, स्तेपी राहत की सांस ले रही थी, वर्षा के मोतियों में घास चमक रही थी और नदी सोने की तरह चमचमा रही थी...सांझ का समय था और छिपते हुए सूरज की किरणों में नदी वैसी ही लाल लग रही थी जैसी लाल थी गर्म खून की वह धारा जो दान्को की फटी छाती से बह रही थी।

''वीर दान्को ने अन्तहीन स्तेपी के विस्तार पर नज़र डाली, स्वाधीन धरती पर आनन्द से छलछलाती नजर, और गर्व से हंसा। फिर जमीन पर गिरा और मर गया।

''लोग तो खुशी में मस्त और आशा से ओतप्रोत थे। वे उसे मरते हुए नहीं देख पाये और न यह कि उसका वीर हृदय उसके मृत शरीर के पास पड़ा अभी तक जल रहा था। सिर्फ एक सतर्क आदमी की ही दृष्टि उसकी ओर गयी और उसने डरकर उस गर्वीले हृदय को रौंद डाला...चिंगारियों की एक फुहार-सी उसमें से निकली और वह बुझ गया...''

''यही वजह है कि स्तेपी में तूफान के पहले नीली चिंगारियां दिखाई देती हैं।''

'आह्वान' यहां से प्राप्त कर

उत्तर प्रदेश ■ जनचेतना, जाफरा बाज़ार, **गोरखपुर** ■ विजय इन्फार्मेशन सेण्टर, कचहरी बस स्टेशन, **गोरखपुर** ■ विश्वनाथ मिश्र, नेशनल पी.जी. कालेज, बड़हलगंज, **गोरखपुर** ■ जनचेतना, डी-68, निरालानगर, **लखनऊ**-226020 ■ राहुल फाउण्डेशन, 69, बाबा का पुरवा (पुराना), पेपरमिल रोड, निशातगंज, **लखनऊ** ■ विमल कुमार, बुक स्टाल, नीलगिरी काम्प्लेक्स के सामने, इंदिरानगर, **लखनऊ** ■ कृष्णगोविन्द सिंह, एस.एच. 1/49, ए-24 (प्रथम तल), जयनगर कालोनी, गिलट बाज़ार, **वाराणसी** ■ प्रोग्रेसिव बुक सेण्टर, विश्वनाथ मन्दिर गेट, बी.एच.यू. परिसर, **वाराणसी** ■ शहीद पुस्तकालय, द्वारा डा. दूध नाथ, जनगण होम्यो सेवासदन, मर्यादपुर, **मऊ** ■ राजेन्द्र प्रसाद, रेनु मेडिकल की गली, मुख्य सड़क, रेणुकूट, **सोनभद्र** ■ डी.के.सचान, एस.एच.-272, शास्त्रीनगर, **गाज़ियाबाद**,
उत्तरांचल ■ विजय कुमार, 55/3, ई.डब्ल्यू.एस., आवास-विकास, **रुद्रपुर (ऊधमसिंह नगर)** ■ रवीन्द्र कुमार, भारतीय जीवन बीमा निगम, **पन्तनगर (ऊधमसिंहनगर)** ■ अविनाश श्रीवास्तव, 87, पन्त भवन, **पन्त नगर विश्वविद्यालय, (ऊधमसिंहनगर)** ■ रामपाल सिंह, भारतीय जीवन बीमा निगम, **रुद्रपुर (ऊधमसिंहनगर)** ■ प्रो. प्यारेलाल, 139, फूलबाग कालोनी, **पन्तनगर** ■

दिल्ली ■ सत्यम वर्मा, 81, समाचार अपार्टमेंट, मयूर विहार, फेज-1, **दिल्ली** ■ अभिनव सिन्हा, बी 7/45, सेक्टर-18, रोहिणी, **दिल्ली** ■ गीता बुक सेंटर, **जे.एन.यू.** ■ बुक कार्नर, श्रीराम सेंटर, **मंडी हाउस** ■ पत्रिका मंडप, कला संकाय, **दिल्ली विश्वविद्यालय** ■ नई किरण पुस्तक भण्डार, 56, हरकेश नगर, **ओखला, दिल्ली**

हरियाणा ■ नरभिंदर सिंह, शहीद भगतसिंह विचार मंच, **हरियाणा**, **प्र./पो.-संतनगर, जिला-सिरसा**, पंकज, प्लाट नं-33, सेक्टर 15, **सोनीपत**

बिहार ■ पीपुल्स बुक हाउस, पटना कालेज के सामने, **पटना** ■ समकालीन प्रकाशन (प्रा. लि.), पुस्तक बिक्री केन्द्र, आजाद मार्केट, पीरमुहानी, **पटना**

बंगाल ■ बुक मार्क, 6, बंकिम चटर्जी स्ट्रीट, **कलकत्ता** ■ जर्नादन थापा, लुकसान बाजार, पो. करेन, जि. **जलपाईगुड़ी** ■ सी.पी. सरोज, सनराइज स्कूल, **छोटा** अदलपुर, सेमलबाड़ी, **दार्जीलिंग** ■ राकेश गोरखा, सरस्वती पुस्तक मन्दिर, प्रधान नगर, **सिलीगुड़ी**

मध्य प्रदेश ■ चिंचोलकर बुक हाउस बस स्टैण्ड, जगदलपुर, **बस्तर** ■ विकल्प सांस्कृतिक मोर्चा, 22 स्वास्तिक काम्प्लेक्स, रसेल चौक, जबलपुर

महाराष्ट्र ■ पीपुल्स बुक हाउस, 15 कावसजी पटेल स्ट्रीट, **फोर्ट, मुम्बई**

राजस्थान ■ कविता, द्वारा योगेश कुमार, 94, मोहननगर (त्रिवेणीनगर), **गोपालपुरा बाईपास, जयपुर** ■ बुक्स एण्ड न्यूज मार्ट, एम.आई.रोड, **जयपुर**

असम ■ शर्मा बुक स्टाल, थाना रोड, चराली, **तिनसुकिया**

नेपाल ■ विश्व नेपाली पुस्तक सदन, श्रवण पथ, बुटवल, **रुपन्देई**